पारद कुबेर प्रतिमा सहित अन्य पारद प्रतिमाएँ

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रुप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय एवं स्पृहनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा तथा दुर्गा प्रतिमा के रुप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शाति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिए धर्म, अर्थ और काम मोक्ष प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो तथा पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन-धान्य से पूर्ण होकर आध्यात्ममय बन जाता है।

पारद धातु अपने आप में पूर्णता का प्रतीक है। सदियों से पारद पर शोध होते आए हैं जहाँ यह भौतिक समृद्धि का परिचायक है वहीं यह आयुर्वेद की पूर्णता भी है। रसायन विज्ञान के माध्यम से पारद का मर्दन कर भस्म के द्वारा प्राणदायक कई औषधियाँ भी बनाई जाती है, और तंत्र जगत् में तो इसका विशेष स्थान है ही। साधनाओं में पूर्णता के लिए पारद की साधना सम्पन्न की जाती है।

मंत्रों से आबद्ध स्वर्णग्रास युक्त पारद से निर्मित प्रतिमा तो अपने आप में चैतन्य होती है इसकी उपस्थिति ही अपने आप में पूर्णता की द्योतक मानी जाती है, अतः प्रयास करके मंत्रों से आबद्ध पारदमूर्ति किसी भी रुप में घर में स्थापित करनी चाहिये। ईश्वरीय प्रदत्त इस दुर्लभ देन को आपके लिए, आपके परिवार के लिए और भावी पीढ़ी के लिए आपको सौंप रहे हैं।

हमारे तंत्र, मंत्र दृष्टा, ज्योतिष मनीषी तथा तत्वदर्शियों के साथ जगद्गुरु शंकराचार्यों ने वर्तमान में जन-समाज की स्थितियों का अवलोकन करते हुए प्रत्येक गृहस्थ के निवास में श्रद्धानुसार पारदेश्वर शिवलिंग, पारदेश्वरी लक्ष्मी, पारदेश्वरी महादुर्गा, पारदेश्वरी गणपति स्थापना हेतु जो अपील की हैं वह इसलिए कि हम मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहें।

पारदेश्वर कुबेर-

जिस प्रकार जल के देवता वरूणदेव और रस के देवता सूर्यदेव हैं, वर्षा के अधिपति इन्द्र हैं, ताप के देवता अग्निदेव हैं, प्राण के देवता वायुदेव है, उसी प्रकार धन-सम्पति के अधिपति श्री कुबेरदेव हैं। ये यक्षपति हैं और समस्त संसार की भौतिक-सम्पदा का स्वामित्व इन्हें प्राप्त है। दरिद्रता-पीड़ित व्यक्ति, जो धन-सम्पदा की, वैभव-विलास की कामना रखते हैं, उनके लिए कुबेर देवता की पूजा बहुत कल्याणकारी कही गई है। कुबेर देवता की पारद निर्मित प्रतिमा अति प्रभावशाली और शीघ्र कल्याण करने वाली है। इससे कुबेर देव शीघ्र प्रसन्न होकर सर्वस्व प्रदान करते हैं।

धनाध्यक्ष कुबेर नवनिधियों-पद्म, महापद्म, शंग, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चसु के स्वामी हैं। एक निधि भी अनन्त वैभवों की प्रदाता मानी गयी है और राजाधिराज कुबेर तो गुप्त, प्रकट संसार के समस्त वैभवों के अधिष्ठाता-देवता हैं। जैसे देवताओं के राजा इन्द्र हैं, गुरु बृहस्पति हैं, उसी प्रकार कुबेर निखिल ब्रह्माण्डों के धनाधिपति होते हुए भी प्रधान रूप से देवताओं के धनाध्यक्ष के रूप में विशेष प्रसिद्ध हैं। महाभारत में यह भी कहा गया है कि महाराज कुबेर के साथ, भार्गव-शुक्र तथा धनिष्ठा नक्षत्र भी दिखलायी पड़ते हैं। इन तीनों की पूर्ण कृपा हुए बिना अनन्त वैभव या गुप्त निधि की प्राप्ति नही होती। भगवान कुबेर को प्रसन्न कर सर्वस्व प्राप्त किया जा सकता है। कुबेर जी को प्रसन्न करने के लिये उनकी पारद निर्मित प्रतिमा सर्वाधिक उपयोगी माध्यम है। पारद कुबेर प्रतिमा अपने घर में स्थापित कर आप कुबेर देव की कृपा प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन में जो भी कमी नजर आ रही है, उसे दूर कर सकते हैं। भौतिक संसाधनों की प्राप्ति कर सकते हैं। अपनी बाधाओं एवं समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

साधना विधि-

1. इस साधना हेतु किसी एकांत स्थान या शांत कमरे का चुनाव करें, जहाँ कोई आपकी साधना में व्यवधान ना डाल पाये।
2. यह साधना धनत्रयोदशी के दिन करें। धनत्रयोदशी को नहाकर स्वच्छ हो लें और स्वच्छ सफेद/पीले वस्त्र धारण करें।
3. वस्त्रों में सुगंधित चमेली का इत्र भी लगायें।
4. पूर्व दिशा की ओर मुख करके ऊन/कुश के आसन पर बैठें।
5. अब अपने सामने बाजोट के नीचे दोनों ओर शुद्ध घी के दो दीपक

प्रज्जवलित करें। दीपकों का मुख साधक की ओर रहे।

6. अब बाजोट पर पीला रंग का वस्त्र बिछायें। बाजोट पर हल्दी से रंगे चावल बिखेर दें और एक थाली लगायें।
7. इस थाली में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करें और हल्दी से रंगे चावलों से ढ़ैरी लगायें और उस पर सुमेरूपृष्ठ कुबेर यंत्र स्थापित करें।
8. अब यंत्र को पंचामृत से स्नान करवायें और स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर स्थापित करें।
9. अब कुंकुम एवं केशर से आठ बिंदिया लगायें और छींटे मारें।
10. इसके बाद पुष्प अर्पित करें।
11. दूध का बना प्रसाद भी चढ़ायें व धूप-दीप एवं अगरबत्ती जलायें ताकि वातावरण सुगंधित हो सके।
12. अब कुछ समय तक आंखे बंद कर भगवान कुबेर का ध्यान करें, फिर संकल्प लें।
13. इसके पश्चात् कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की 3 माला जाप करें।

"ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये
धनधान्यसमृद्धिं में देहि दापय स्वाहा।"

मंत्र जप की समाप्ति पर आंखें बंद करके एक बार पुनः राजाधिराज कुबेर का स्मरण करें। ध्यान करें और प्रार्थना करें कि आपकी मनोकामना पूर्ण करें। इसके बाद सुमेरूपृष्ठ पारद कुबेर यंत्र को अपने पूजाघर में ही स्थापित रहने दें और कमलगट्टे की माला आप नित्य पूजा जाप के लिए रख लें व बाकी बची समस्त सामग्री को दीपावली के दूसरे दिन किसी सरोवर या तालाब में विसर्जित कर दें। आप धन-धान्य से परिपूर्ण हो जायेंगे और आपकी सारी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूर्ण होगी।

न्यौछावर राशि- 2500/-

पारदेश्वरी महादुर्गा-

मानव जीवन में पग-पग पर समस्याएँ हैं चाहे धन से संबंधित हो, या व्यापार से। रोजगार पाने की समस्या हो या नौकरी में प्रगति की। संतान बाधा हो या कन्या विवाह की। इस तरह से कुछ-कुछ समस्याएँ नित्य नये-नये रुप धर कर हमारे सामने आती रहती हैं और इनसे मुक्त होने के लिए हम कभी किसी तांत्रिक के पास जाते हैं तो कभी-कभी सिद्ध बाबाओं के पास भटकते रहते हैं और अपनी मेहनत से कमाई हुई दौलत को उन्हें सौंपते रहते हैं। आप स्वयं ही इन समस्याओं से मुक्त हो सकें इसके लिए हमारे ऋषि-महर्षियों ने पारदेश्वरी महादुर्गा की स्थापना करने की प्रेरणा प्रदान करते आये हैं। पारद प्रतिमाओं की स्थापना वैसे तो कभी भी की जा सकती है लेकिन जब-आस-पास विशेष मुहूर्त हो तब उनका उपयोग करना हमारे लिए हितकारी, भाग्योदयकारी होता है। वर्तमान समय में नवरात्री, दुर्गानवमी, विजयदशमी, धनत्रयोदशी, दीपावली फिर ग्रहण आदि विशेष मुहूर्त आगामी समय में है।

पारदेश्वरी महादुर्गा न्यौछावर राशि- 2100/-

पारदेश्वर गणेश-

शिव के पुत्र गणेश देवताओं में अग्र पूज्य है। इनकी पूजा किये बिना सभी कार्य अधुरे रहते हैं। यदि किसी भी कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करना हो तो सर्वप्रथम ऋद्धि-सिद्धि दाता गणेश का ध्यान किया जाता है। अतः पारदेश्वर गणेश की महिमा अपरम्पार है।

पारदेश्वर न्यौछावर राशि- 1100, 2100/-

पारदेश्वर शिवलिंग-

जहाँ शिव है वहीं श्री संपन्नता है। मां पार्वती शक्ति स्वरुपा जगदम्बा है जो शिव के ही स्वरुप हैं। माता गौरी स्वयं अन्नपूर्णा हैं, लक्ष्मी स्वरुपा हैं। भगवान भोलेनाथ की पूजा साधना करने पर लक्ष्मी साधना का ही फल प्राप्त होता है।

भगवान शिव कुबेराधिपति हैं उनका यह स्वरुप साधक को अतुलनीय धन-धान्य प्रदान कर देता है। भगवान शंकर तंत्र के स्वामी हैं, तंत्र के जन्मदाता हैं और पारद उनका प्रिय धातु है इसीलिए "पारदेश्वर शिवलिंग" को तंत्र सामग्री में गिना जाता है और इसी की पूजा श्रेष्ठ मानी गई है।

इस बार दीपावली पर्व पर आप भी पारदेश्वर लक्ष्मी, पारदेश्वर गणेश, पारदेश्वर महादुर्गा, पारदेश्वर शिवलिंग आदि स्थापित कर अपने जीवन को जगमगाती रोशनी से भर दें। इन वस्तुओं का उपयोग कर उन ऋषि-महात्माओं की तपस्या को सफल बनायें जिन्होंने मानव जाति के लिए इतनी बड़ी खोज कर भौतिक सम्पन्नता का मार्ग सुझाया है और यदि अब भी हम दरिद्रता का रोना ही रोते रहना चाहते हैं तो साक्षात् लक्ष्मी भी हमें सम्पन्न नहीं बना सकती।

न्यौछावर राशि- 1500, 2100, 3100, 5100/-

पारदेश्वरी महालक्ष्मी प्रयोग-

सुख-संपत्ति, श्री संपदा तथा वैभव प्राप्ति के लिए मां लक्ष्मी की कृपा परम आवश्यक है। उनकी कृपा के बिना धन-संपत्ति, श्री समृद्धि की प्राप्ति संभव नहीं हैं।

पारदेश्वरी महालक्ष्मी, जीवन का सौभाग्य, विश्व की अद्वितीय अद्भुत कलाकृति मंत्र-सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त जिसकी स्थापना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है। अन्न-धन्न भंडार, ऋण मुक्ति, धन वर्षा के लिए दुर्लभ महालक्ष्मी विग्रह। जीवन में सभी प्रकार के सौभाग्य तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अद्वितीय।

हे! भगवती महालक्ष्मी! अपने उपासकों को धन-ऐश्वर्य, भूमि, स्वर्ण कीर्ति, आयु, पुत्र, बंधु-बांधव प्रचुर मात्रा में प्रदान करती हैं, जिससे वे सदैव प्रसन्नचित्त होकर आपकी उपासना में तत्पर रहें।

पारदेश्वरी महालक्ष्मी न्यौछावर राशि- 1100 से 2100/-

पारद लक्ष्मी-नारायण-

'लक्ष्मी नारायण' शब्द का प्रयोग परम पिता परमात्मा तथा आदि शक्ति के लिये किया जाता है। कुछ लोगो ने इसे भगवान विष्णु तथा उनकी शक्ति "श्री" के लिये भी प्रयुक्त करते हैं। भगवान नारायण या विष्णु जी की पूजा सदैव उनकी शक्ति लक्ष्मी के साथ करनी चाहिए। धन की महत्ता सर्वोपरि है और मानव के प्रारम्भिक काल से आज तक रही है। जहां लक्ष्मी का नारायण के साथ आगमन होता है वह लक्ष्मी सात्विक होती है, नीति पूर्ण उपार्जित होती है। वह लक्ष्मी चिर काल तक स्थायी रहती है क्योंकि नारायण में ही ऐसा गुण है जो चंचला लक्ष्मी को बांध कर रख सकते हैं। सुख सौभाग्य के साथ भौतिक समृद्धि सम्पन्न होना अनिवार्य है। इसीलिए लक्ष्मी नारायण दोनों की शक्तियों का वरण एक साथ करना ही लक्ष्मी नारायण कवच का विशेष अभिप्राय है।

पारद लक्ष्मी-नारायण न्यौछावर राशि- 5100/-

पारद लक्ष्मी-गणेश-

यदि आप चाहते हैं कि आपका जीनव धन-धान्य से पूर्ण हो, ऐश्वर्यशाली हो, आप समस्त भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन जुटा सकें, और इस जीवन में वह सबकुछ भोग सकें जिसकी आप इच्छा रखते हैं तो

अब समय आ गया है अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने का। जी हां, दीपावली का प्रकाशमय पर्व आने वाला है। यही वह समय है जब आप माँ लक्ष्मी और भगवान गणेश को प्रसन्न कर अपने जीवन में सर्वस्व प्राप्त कर सकते हैं। जीवन क्षणभंगुर है, किसने देखा है, आने वाला कल हमारे लिये है या नहीं.. .अतः समय गंवाये बिना इस दीपावली पर अवश्य की पूजन करें माँ लक्ष्मी और भगवान गणेश का। पारद लक्ष्मी-गणेश न्यौछावर राशि- 2100/-

पारद राम दरबार-

धर्म, आचरण और मर्यादा के पुरुषोत्तम श्रीराम है। सात्विक तंत्र में राम का महत्व है। पारिवारिक सुख, शांति और जीवन के संग्राम में विजय के लिए भगवान श्री राम का जो स्थान है, वह अद्वितीय है। तंत्र ग्रंथों में राम की उपेक्षा नहीं है। जीवन के संग्राम में विजय और पारिवारिक सुख, शान्ति तथा राजसी सुख (आनन्दमय जीवन) के लिए राम की साधना से बढ़कर कुछ नहीं।

पारद राम दरबार न्यौछावर राशि- 5100/

- पारद काली-

काली की उपासना से साधक के जीवन के समस्त विघ्न ठीक उसी प्रकार समाप्त हो जाते हैं, जैसे कि अग्नि के संपर्क में आकर पतंगें भस्म हो जाते हैं। दस महाविद्याओं में प्रथम स्थान महाकाली का है, अतः इनकी साधना संपन्न करने वाले साधक को सुगमता से सभी सिद्धियां हस्तगत हो जाती है। काली साधक समस्त लोकों को वशीभूत करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। भगवती अपने साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर उसे श्री, संपन्नता तथा श्रेष्ठता प्रदान करती हैं। पारद काली न्यौछावर राशि- 2100/-

पारद शिव-पार्वती-

बच्चों का समय पर विवाह करना एक बड़ी समस्या का रुप ले चुका है। पुत्र या पुत्री के विवाह में कई प्रकार की बाधाऐं उत्पन्न हो जाती है। कभी उचित वर या कन्या नहीं मिलती तो कभी शिक्षा, सुन्दरता, कभी कुण्डली मिलान, कभी खानदान इत्यादि में कोई ना कोई कमी की वजह से विवाह में विलम्ब हो जाता है। बच्चों की बढ़ती आयु देखकर माता-पिता की चिन्ताएँ भी बढ़ती जाती है। यदि आप भी अथवा आपके परिवार में कोई भी अधिक उम्र होने के बाद विवाह न होने से परेशान है तो पारद शिव-पार्वती पूजन कर इन समस्याओं से निवारण पायें।

न्यौछावर राशि- 3100/-

पारद शिव परिवार-

पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने और सम्पूर्ण दाम्पत्य सुख की प्राप्ति हर कोई चाहता है। दाम्पत्य जीवन में आने वाले विघटन एवं अन्तर्विरोध भी एक दारुण समस्या का केन्द्र है। विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन में यदि किसी प्रकार की वंचना अथवा रिक्ति है तो उनके परिशमन हेतु भी मंत्रोपासना व व्रत इत्यादि का पालन किया जाता हैं। पारद शिव परिवार का घर में स्थापन समस्या के निदान में सहायक हो सकता है। न्यौछावर राशि-5100/-

पारद सरस्वती-

प्रायः बच्चे पढ़ने में आनाकानी करते ही हैं क्योंकि पढ़ने से ज्यादा खेलकूद में, टी.वी. देखने में मजा आता है। लेकिन आज के युग को देखते हुए यदि बच्चे समय पर शिक्षा के प्रति गम्भीर नहीं है तो उसके परिणाम आगे चलकर कष्टकारी होते हैं। कई बार बच्चा पढ़ाई तो दिन-रात करता है लेकिन याद कुछ भी नहीं रहता, अथवा भूल जाता है, परेशान रहता है। आप भी पारद सरस्वती का पूजन कर इन समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

पारद सरस्वती न्यौछावर राशि- 2100/-

पारद है जहाँ लक्ष्मी है वहाँ

'पारद' शब्द में पत्र विष्णु, अत्र (अकार) कालिका, रत्रशिव और दत्र ब्रह्मा के प्रतीक है।

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, पारद श्रीयंत्र, पारद कुबेरयंत्र, पारद लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा, पारद पिरामिड, पारद माला, पारद गुटिका या अन्य किसी भी पारद प्रतिमा के रूप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शांति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिये धर्म, अर्थ और काम, मोक्ष, धन, आरोग्य, ज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो, पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन-धान्य से पूर्ण होकर अध्यात्ममय बन जाता है।

जो पारद लिंग का पूजन करता है उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। इसके दर्शन से १०० अश्वमेघ यज्ञ करने, करोड़ों गौ दान करने एवं सहस्त्र मण स्वर्ण दान करने का फल मिलता है। पारे से अधिक गुण वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा।

1. पारद शिवलिंग 1100 रू. से आरम्भ 2. पारद प्रतिमाएं 1100 रू. आरम्भ 3. पारद माला 1500 रू. से आरम्भ 4. पारद श्रीयंत्र 1100 रू. से आरम्भ 5. श्री सुमेरूपृष्ठ पारद निर्मित कुबेरयंत्र 2100रू. से आरम्भ 6. पारद पिरामिड 550रू. 7. ऑफिस, दुकान, आदि के वास्तुदोष निवारण के लिए विशिष्ट नौ सुमेरू युक्त पारद पिरामिड 2100 रू. 8. पारद पिरामिड लॉकेट 550 रू. (पारद प्रतिमाएं व अन्य सामग्री की न्यौंछावर आकार व वजन के अनुसार)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र
'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)
फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625
E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org

पारद हनुमान-

कलियुग में हनुमानजी सर्वाधिक उपास्य देवता हैं। वे शक्ति के आगार, तेज की साकार प्रतिमा और साहस के प्रतीक हैं। उनका नाम लेतेहीसब संकट टल जाते हैं। हनुमान जी का नाम संकटमोचन भी है। आजन्म ब्रह्मचारी हनुमान जी वानर वंशी होते हुए भी सर्व-समर्थ देवता हैं। वे शिव के अवतार माने जाते हैं और वेद-वेदांग, ज्योतिष, योग, व्याकरण, संगीत, आध्यात्म तथा मल्ल विद्या के आचार्य हैं। राजनीति और रणनीति में भी वे कुशल हैं।

रुद्रावतार, पवनपुत्र, अजर-अमर, अखण्ड ब्रह्मचारी एवं प्रबल पराक्रमी भगवान् श्री हनुमान की उपासना का सूक्ष्म संकेत वेद-मन्त्रों में प्रतिपादित है और सकल साधना मन्त्रों में शिरोमणि ओंकार के मकाराक्षर शिव के अवतार रूप में इनका प्रादुर्भाव पुराणों में विस्तार से निरूपित है। रामायण रूप महामाला के महनीय रत्न श्री हनुमान की उपासना से बुद्धि, बल, कीर्ति, धीरता, निर्भीकता, आरोग्य, सुदृढ़ता और वाक्पटुता की प्राप्ति होती है। यह बात आनन्दरामायण में इस प्रकार कही गई है-

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता।
सुदार्ढ्यं वाक्स्फुरत्वं च हनुमत्स्मरणाद् भवेत्।।

तन्त्र वाग्मय में गारुड़ी तन्त्र, रुद्रयामल, मन्त्र महार्णव, मन्त्र महोदधि, सुदर्शन संहिता, अगस्ति संहिता, नारद पुराणान्तर्गत भागवत् तन्त्र, तन्त्रसार, प्रपंचसार आदि ग्रन्थों में श्री हनुमान की तान्त्रिक साधना के मन्त्र, कवच, शतनाम, सहस्त्रनादि दिये हैं और यही कारण है कि इनकी पूजा-उपासना सर्वत्र व्याप्त है।

पारद हनुमान न्यौछावर राशि- 2500/-

पारद मुद्रिका-

१. पारद मुद्रिका को तीन माह तक धारण करने से आपका शरीर आकर्षक बनता है। तीन माह के पश्चात् किसी को दान में दे दें।

२. पारद मुद्रिका के सामने '☐ नमः पारदेश्वराय विभवाय नमः' मंत्र का जप ११ बार जप कर, दायें हाथ की किसी भी ऊंगली में १७ दिन तक पहनने से रोग मुक्ति होती है। १८वे दिन शनि का दान लेने वाले को दे दें।

३. पारद मुद्रिका पहनने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व सम्मोहक हो जाता है, तथा उसके प्रभाव में आने वाले व्यक्ति उससे प्रभावित होते ही हैं। इसे आप ४५ दिन तक धारण कर, किसी भिखारी को ४६ वें दिन दान में दे दें। पारद मुद्रिका न्यौछावर राशि- ११००/-

ठोस रुप कथित पारद से जो सामग्री बनती है, वह अमूल्य एवं चमत्कारिक होती है। मनुष्य को ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति कराती है। शारीरिक एवं मानसिक शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति का विकास करने में पूर्णतया सक्षम है, तथा आर्थिक व्यवधान को दूर कर कारोबार में वृद्धि करती है। किसी भी तांत्रिक क्रिया में कवच की भाँति मनुष्य की रक्षा करती है एवं तांत्रिक क्रियाओं को प्रभावहीन कर देती है।

वास्तु के अनुसार यदि आपके घर में कोई वास्तु दोष है, दुकान आदि का कारोबार अचानक बंद हो गया है, नौकरी चली गई है, निराशाओं ने घेर लिया है तो आपको इन दोषों के निवारण के लिये पारद पिरामिड स्थापित करना चाहिये। वास्तु दोष संबंधी एवं ग्रह दोष संबंधी बाधाएँ निःसन्देह दूर हो जायेगी।

अब तो अनेक प्रकार की पारद सामग्रियों का निर्माण किया जाता है तथापि यह सामग्री इतनी सुलभ नहीं है किन्तु फिर भी भक्तों के लिये पारद सामग्री का विशेष रूप से निर्माण किया जाता है। पारद सामग्री में हमारे पास निम्न सामग्री उपलब्ध है-

पारद शिवलिंग, पारद बाणलिंग, पारद गणेश, पारद लक्ष्मी, पारद विष्णु, पारद दुर्गा, पारद राम दरबार, पारद हनुमान, पारद पद्मावती, पारद पार्श्वनाथ, पारद काली, पारद शिव, पारद शिव-पार्वती, पारद शिव-पार्वती-गणेश, पारद माला, पारद मोती, पारद पिरामिड (छोटे), पारद पिरामिड एकल, पारद नौ खण्ड पिरामिड, पारद श्रीयंत्र, पारद मुद्रिका, सुमेरुपृष्ठ पारद कुबेर यंत्र।

उपरोक्त सामग्री "त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र" के मुख्य कार्यालय, जोधपुर में उपलब्ध है। आप पाठकगण यदि उपरोक्त सामग्री मंगवाना चाहें तो हमें पत्र लिखे, टेलीफोन करें अथवा ई-मेल द्वारा आर्डर दे सकते हैं।

☐☐☐

पुत्रोत्पत्तिदाता एक सौ सित्तरिया यंत्र

इस यंत्र के बारे में कहा जाता है कि यदि किसी दम्पत्ति को संतान न हो रही हो या पुत्र प्राप्ति की इच्छा पूर्ण न हो तो एक सौ सित्तरिया यंत्र निश्चित ही रामबाण होता है। इस यंत्र की महिमा के बारे में यह भी उल्लेख मिलता है, कि इसके प्रभाव से मात्र पुत्र ही उत्पन्न नहीं होता, अपितु वह बालक पूर्ण तेजस्विता से युक्त, सदाचारी भी होता है। बालक के पुण्य से माता-पिता की भी यशोवृद्धि होती है एवं घर में सुख, संपत्ति, वैभव का विकास होता है।

प्रयोग विधि-इस यंत्र साधना को पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई भी सम्पन्न कर सकता है। चाहे तो दोनों भी साधना में बैठ सकते हैं। इसके लिए किसी थाली में हल्दी का लेप लगाकर उसे अंदर से पूरा पीला कर लें। उस पर कुंकुम से निम्न यंत्र का अंकन करें। थाली के मध्य भाग में एक पुष्प का आसन देकर उस पर "एक सौ सित्तरिया यंत्र" पेंडल, मुद्रिका को स्थापित करके किसी भी माला से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें। मंत्र इस प्रकार है-

।। ॐ ह्रीं सुपुत्रं देहि देहि ॐ शमभवाय नमः।।

और धारण कर लें। यह पेंडल/मुद्रिका आप अपना नाम, पिता/पति का नाम, गौत्र लिखकर प्राण-प्रतिष्ठित करवाकर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

न्यौछावर– पैंडल 1500रू., मुद्रिका 2100रू.